कैंसर पर भारी रेवा का नृत्य

अंकुर शुक्ला
पूर्वी दिल्ली

कैंसर बीमारी के अहसास से ही व्यक्ति सहम जाता है, लेकिन कुछ ऐसे लोग हैं, जिन्होंने अपने हौसले के बल पर इस खतरनाक बीमारी को मात दी है। ऐसी ही शख्सियत हैं लक्ष्मीनगर के जे एक्सटेंशन में रहने वाली नृत्यांगना रेवा (62)। इन्होंने कैंसर से जूझते हुए भी शास्त्रीय नृत्य विधाओं के प्रशिक्षण और प्रचार-प्रसार का कार्य जारी रखा। इनके पति तीरथ आजवानी भी प्रसिद्ध नृत्य कलाकार हैं। रेवा के मुताबिक वह कथक गुरु पंडित बिरजू महाराज के प्रथम शिष्य हैं। रेवा के इस बुरे दौर में पति ने उनका पूरा साथ दिया। रेवा आज स्वस्थ्य महसूस कर रही हैं। नृत्य का प्रशिक्षण कार्यक्रम भी लगातार जारी है।

नृत्यांगना रेवा ने अपने हौसले के बल पर कैंसर बीमारी को मात दी

बीमारी से जूझते हुए देतीं रही बच्चों को नृत्य का प्रशिक्षण

बच्चों की प्रशिक्षक हैं रेवा

रेवा के मुताबिक प्रशिक्षक के रूप में उनकी पारी की शुरुआत वर्ष 1993 से शुरू हुई। वह बच्चों को अपना भविष्य मानती है। पूरे लगन के साथ उन्होंने च्च्चों को प्रशिक्षित करना शुरू कर दिया। वह कथक के साथ ओडिसी और रविंद्र संगीत पर आधारित नृत्य विधाओं की कुशल प्रशिक्षक है। उनकी मेहनत रंग लाई। वह बताती हैं कि वर्तमान में मेरे संरक्षण में 200 से अधिक बच्चे नृत्य का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने इसके लिए किसी संस्थान गठन नहीं किया। बतौर रेवा ऐसा कर उन्हें आत्मसंतुष्टि मिलती है। उनका कहना है कि जब तब शरीर में सांस है यह सिलसिला जारी रहेगा। पुरस्कार और स्मृतिचिन्ह उनके शो-केश की शोभा बढ़ा रहे हैं, जिसकी चर्चा वह करने से मना करती है। रेवा कहती है कि मंच प्रदर्शन का सिलसिला अभी भले ही थम गया, लेकिन प्रशिक्षक की भूमिका में वह लगातार भविष्य की खोज में आगे बढ़ती जा रही हैं।

समूह नृत्य का प्रशिक्षण देतीं रेवा। फाइल फोटो।

पीड़ा में आनंद तलाशा

रेवा ने बताया कि वर्ष 2013 मे उन्होंने स्तन में गांठ विकसित होता हुआ महसूस किया। वह कुछ दिनों तक नजरअंदाज करती रहीं, लेकिन एक दिन अचानक दर्द महसूस होने पर चिकित्सक को दिखाया। जांच के बाद पता चला कि कैंसर ने चपेट मे ले लिया है और वह इस बीमारी के दूसरे स्टेज से जूझ रही है। यह जानकर वह बेहद निराश हो गई। बीमारी के खुलासे के बाद रेवा का इलाज राजीव गांधी कैंसर अस्पताल में शुरू किया गया। रेवा के मुताबिक कैंसर की पीड़ा झेलते हुए भी बच्चों के भविष्य की जिम्मेदारी का अहसास था, जो उनसे नृत्य का प्रशिक्षण ले रहे थे। कीमोथेरेपी की पीड़ा से गुजरते हुए भी नृत्य प्रशिक्षण का सिलसिला जारी रखा। ऐसा दो वर्षो तक चलता रहा।

पति और गुरु की शुक्रगुजार

रेवा ने बताया कि निराशा और पीड़ा के उस दौर मे उनके पति तीरथ आजवानी और बच्चों ने हिम्मत दी। बाद मे मशहूर कथक गुरु पंडित बिरजू महाराज और शोभना नारायण ने उन्हें हौसला दिया। बतौर रेवा वह दोनों ही हस्तियों की शुक्रगुजार है। उन्होंने नृत्य गुरुओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उन्होंने मुझे अपने संतान सरीखा प्यार और हौसला दिया। आज अगर वह जिंदा है तो पति- परिवार और गुरु की इसमे सबसे बड़ी भूमिका है।

विदेशों में भी नृत्य का प्रदर्शन

रेवा ने बताया कि वह अपने पति की शिष्या भी रह चुकी है। वह जमशेदपुर के सितगोड़ा इलाके मे रहती थीं। पिता टाटा कंपनी में काम करते थे। उन्होंने कम उम्र मे ही रेवा की प्रतिभा को पहचान लिया था। वर्ष 1960 में उन्हे भारतीय कला केंद्र मे कत्थक का प्रशिक्षण लेने के लिए भेजा गया। इसी बीच उनकी मुलाकात वहां के शिक्षक और प्रशिक्षक तीरथ आजवानी के साथ हुई। दोनों एक दूसरे को पसंद करने लगे। बाद मे परिजनों की सहमति से वह वैवाहिक बंधन में बंध गए। रेवा के मुताबिक 1990 के दशक में उन्होंने अपने पति के साथ वेस्ट इंडीज के सुरीनाम और गुआयना मे नृत्य कला का मंच प्रदर्शन किया।

राइफल वाले हाथ में कलम

द्वारका में आयोजित कवि गोष्ठी में प्रेम बिहारी मिश्र और मौजूद कवि।

संतोष शर्मा
पश्चिमी दिल्ली

भारतीय संस्कृति के विकास में साहित्य की अहम भूमिका रही है, लेकिन वर्तमान समय में लोगों में इसके प्रति रुचि कम होती जा रही है। लोग भौतिकवादी चकाचौंध में साहित्य और कविताओं से दूर होते जा रहे हैं। दूसरा कारण यह भी है कि नवोदित कवि व लेखकों को सही मंच नहीं मिल पा रहा। द्वारका निवासी प्रेम बिहारी मिश्र ने ऐसे ही लोगों को सही मंच और बढ़ावा देने को ठानी और कवि डा. अशोक व और डा. प्रसन्नांशु के साथ मिलकर दिल्ली पोयट्री सर्कल (डीपीसी) की स्थापना कर डाली। वर्तमान में इस सर्कल में 40 से ज्यादा कवि जुड़ चुके हैं।ा यह ग्रुप नवोदित साहित्यकारों को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर गोष्ठी, कवि संध्या व कवि सम्मेलन का आयोजन करता है।

प्रेम बिहारी मिश्र ने नवोदित साहित्यकारों का बनाया ग्रुप

दिल्ली पोयट्री सर्कल से जुड़े हैं कई नामी कवि व लेखक

दिल्ली पोयट्री सर्कल के सचिव प्रेम बिहारी मिश्र।

प्रतिभाएं निखारने के लिए बनाया मंच

अपने अनुभव से प्रेम बिहारी ने पाया कि द्वारका में कई नवोदित व संभावनायुक्त कवि व लेखक रहते हैं। उनमें अच्छी कविता और साहित्य रचना की काफी संभावनाएं हैं। वह कहते हैं, 'सही मंच और जानकारी के अभाव में कवियों-लेखकों की प्रतिभा नहीं निखर पाती है। लिहाजा मैंने दो वर्ष पहले एक साहित्यक मंच की स्थापना के बारे में सोचा और पुराने कवि के साथ-साथ नए कवि व साहित्यकारों को जोड़ने में जुट गया।' इस बीच ग्रुप द्वारा जगह-जगह कवि सम्मेलन के आयोजन कराए गए। द्वारका सेक्टर-6 में स्थान मिलने पर इस वर्ष मार्च में डीपीसी की औपचारिक शुरुआत भी कर दी गई।

कविताएं लिखने का शौक

बीएसएफ में सहायक निदेशक के पद से सेवानिवृत्त प्रेम बिहारी मिश्र मूल रूप से ग्वालियर (मप्र) के निवासी हैं। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) में ज्यादातर इनकी तैनाती गुजरात में रही, लेकिन वर्तमान में दिल्ली के द्वारका सेक्टर 22 में रह रहे हैं। इन्हें शुरू से ही कविताएं लिखने का शौक था। सेवानिवृत्ति के बाद भी यह सिलसिला चलता रहा और कई काव्य कार्यक्रमों में हिस्सा भी लिया। इसी बीच इनकी कई जाने माने कवि व साहित्यकारों से जान पहचान हो गई।

विभिन्न भाषाओं के कवियों का मिलन

डीपीसी में हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी, डोगरी व हरियाणवी के कवि जुड़े हुए हैं। वे अपनी रचना काव्य गोष्ठी में सुनाते हैं। वहीं इसके सदस्य अच्छे साहित्यकार की रचना एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने के लिए भी पूरी मदद करते हैं।

कई नामी कवि हैं इस ग्रुप में

डा. कीर्ति काले, डा. शबाना नजीर, डा. चद्रमणि ब्रह्मदत्त, अशोक वर्मा, जय सिंह आर्य, सुषमा भंडारी, नीना सहर, सुश्मलता महाजन, शोभना मित्तल, अरविंद योगी, रमेश तेलंग, शैफाली शुरभि व राजेंद्र चुग।

कविता हृदय को जोड़ने वाली चीज है। वर्तमान में समाज में बिखराव ज्यादा है। लिहाजा इस प्रकार के प्रयास से कविता और साहित्य से ही समाज को जोड़ कर रखा जा सकता है। इसी अवधारणा के तहत मैं इस संस्था से जुड़ा हूं। डीपीसी नवोदित साहित्यकार को बढ़ावा देने का भरसक प्रयास कर रहा है। पुराने व नामी गिरामी कवि संस्था से जुड़ नए कवि और साहित्यकारों को उससे तमाम विद्याओं की जानकारी देते हैं।

– डॉ. अशोक लव, वरिष्ठ साहित्यकार

हर माह कवि गोष्ठी

फिलहाल इस ग्रुप में 40 से ज्यादा सदस्य हैं। इस ग्रुप द्वारा हर महीने द्वारका में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इसमें जो कवि जुटते हैं वे काव्य पाठ करने के साथ ही दूसरे कवियों की रचनाओं की समीक्षा भी करते हैं। यही नहीं, वे उनकी रचना में सुधार के लिए सलाह भी देते हैं। प्रेम बिहारी मिश्र बताते हैं, 'संस्था के अध्यक्ष कवि व साहित्यकार डा. प्रसन्नांशु और अर्थ सचिव वीरेंद्र कुमार मंसोत्रा सहित ताराचंद शर्मा इस ग्रुप के विस्तार में खासा सहयोग दे रहे हैं।'

अब कमर का दर्द होगा छूमंतर

आइआइटी छात्रों ने तैयार किया सस्ता व कारगर इलाज

इंजेक्शन से मिलेगी राहत, खराब हुआ हिस्सा भी पुनर्निर्मित होगा

शैलेन्द्र सिंह
नई दिल्ली

कमर दर्द की परेशानी पिछले एक दशक में न सिर्फ बुजुर्गों बल्कि युवाओं को भी चपेट में ले चुकी है। बदली लाइफ स्टाइल हो या फिर काम का बढ़ता दबाव, आज के दौर में कमर दर्द से ग्रस्त लोगों की संख्या में दिनोंदिन इजाफा हो रहा है। ऐसे दर्द का इलाज यदि एक इंजेक्शन से हो जाए तो हैरान होना लाजिमी है। कुछ ऐसा ही कारनामा आइआइटी दिल्ली के छात्र व शिक्षकों ने डिपार्टमेंट ऑफ टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी के अंतर्गत अंजाम दिया है। यदि सबकुछ ठीक रहा तो क्लीनिकल ट्रायल के बाद इस उपचार तकनीक के जरिए लाखों रुपये के खर्च से होने वाला कमर दर्द का इलाज महज तीन से चार हजार रुपये मिलने लगेगा।

आइआइटी दिल्ली में डिपार्टमेंट ऑफ टेक्सटाइल टेक्नोलॉजी के प्रो. सौरभ घोष बताते हैं कि इस उपचार तकनीक में टिशू इंजीनियरिंग का इस्तेमाल किया है। इसमें सिल्क की मदद से हाइड्रोजैल और सिल्क माइक्रोकैप्सूल का निर्माण करते हैं और इन दोनों के सम्मिश्रण से इंजेक्शन तैयार करते हैं। ये इंजेक्शन पीड़ित को उसकी कमर के उस हिस्से में विशेषज्ञ डॉक्टर की सलाह पर दिया जाएगा, जहां वो दर्द से ग्रस्त है। प्रो. घोष बताते हैं कि सिल्क में उस तत्व की प्रचुरता होती है जोकि खराब डिस्क के निर्माण में मददगार साबित है। इस तरह इस इंजेक्शन में मौजूद हाइड्रोजैल जहां पीड़ित व्यक्ति को तुंरत दर्द से राहत प्रदान करने की दिशा में काम करेगा, वहीं इसमें मौजूद सिल्क माइक्रोकैप्सूल कमर के क्षतिग्रस्त हिस्से के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया को अंजाम देगा। प्रो.घोष बताते हैं कि यदि सामान्य प्रक्रिया के हिसाब से देखे तो छह से सात महीने में इस इंजेक्शन की मदद से कमर दर्द को पूरी तरह से खत्म किया जा सकेगा। इस प्रोजेक्ट में शामिल बायोमेडिकल इंजीनियरिंग के छात्र सुमित मुराब बताते हैं कि अभी उपलब्ध इलाज में या तो कमर में मौजूद क्षतिग्रस्त डिस्क को ही निकाल दिया जाता है या फिर उसकी जगह इंप्लांट किया जाता है। ये दोनों ही इलाज जहां एक ओर महंगे हैं, वहीं दूसरी ओर इनके माध्यम से मिलने वाली राहत के बाद मरीज पूरी तरह से पुरानी स्थिति में नहीं आ पाता है, जबकि टिशू इंजीनियरिंग के अंतर्गत होने वाले इलाज के मरीज को न सिर्फ दर्द से तत्काल राहत मिलती है बल्कि उसकी क्षतिग्रस्त डिस्क भी अपनी निर्धारित प्रक्रिया के अंतर्गत ठीक होने लगती है।

मानव य प्रयोग के बाद ही उपलब्ध होगा

इस प्रोजेक्ट को लेकर आइआइटी की ओर से जानवरों पर प्रयोग किया जा चुका है। प्रोजेक्ट में शामिल छात्र सुमित बताते हैं कि अभी इस तकनीक का इस्तेमाल बकरे पर किया गया और इसके सकारात्मक नतीजे देखने को मिले हैं। अब कोशिश है कि इसका मानवीय प्रयोग हो सके और उसके बाद ही इसे आम मरीज को उपचार के लिए उपलब्ध करा सकेंगे।

WEEKEND EXCHANGE CARNIVAL
19th April'15

0% ब्याज 3 वर्षों के लिए. 100% पावर ज़िन्दगी भर के लिए.

पोलो ट्रेंडलाइन
0% ब्याज 3 वर्षों के लिए*

पोलो कम्फर्टलाइन तथा हाईलाइन
3.99% पर 3 वर्षों के लिए#

भारत के लिए सुरक्षित कारें | सभी पोलो मॉडल्स पर एयरबैग्स स्टैंड्र्ड हैं | कॉल (24x7) : 1800 209 0909 / 1800 102 0909
बल्क और कॉर्पोरेट बिक्री के लिए सम्पर्क करें gaurav.sharma1@volkswagen.co.in

Volkswagen. Das Auto.

BUY SELL EXCHANGE
Das WeltAuto. Best Exchange Offer. Guaranteed.

POWERED BY Volkswagen Finance

North
Volkswagen Delhi North
(Gujrawala Town)
011 - 49111000, 9868124146
8860609081

East
Volkswagen Delhi East
(Patparganj)
011 - 40620000 - 14,
9582228241 / 5

South
Volkswagen Delhi Metropolitan
(Saket)
011 - 42426666, 9540869200

Volkswagen Safdarjung
(Opp. Bhikaji Cama Place)
011 - 42422222, 8750042010

Volkswagen Capital
(Mohan Estate Mathura Road)
9555225000

West
Volkswagen Delhi West
(Motinagar)
011-45340000, 9582223885

Faridabad
Volkswagen Faridabad
(Near Mewla Maharajpur Crossing)
8860086101, 8860086104

Gurgaon
Volkswagen Gurgaon
(MG Road)
0124 - 4768888, 9540019801

Noida
Volkswagen Noida
(Sector 6)
0120 - 4069900, 9582226969

नियम और शर्तें लागू. ऊपर दर्शायी गई ब्याज दर वार्षिक है. *0% ब्याज केवल पेट्रोल वेरिएन्ट पर है. #3.99% ब्याज केवल डीजल वेरिएन्ट पर है. सीमित अवधि ऑफ़र. फॉक्सवैगन फ़ायनांस प्रा. लि. के पूर्ण विवेक पर फायनांस. सभी ऑफ़र्स केवल फॉक्सवैगन डीलर्स की ओर से हैं. दिखाए गए फीचर्स तथा सूचीबद्ध एक्सेसरीज़ स्टैण्ड्र्ड उपकरण का हिस्सा नहीं भी हो सकते हैं. वास्तविक कलर में भिन्नता हो सकती है. फीचर्स और विनिर्धारणों को पूर्व सूचना के बिना बदला जा सकता है. हमेशा सीटबेल्ट्स पहनें. **रोडसाइड एसिस्टेन्स केवल आवरित सीमाओं के अंतर्गत. अधिक जानकारी के लिए, कृपया हमारी डीलरशिप पर जाएं.